अध्याय 19

# अय्यूब का उत्तर

अध्याय 19 में अय्यूब आशा की प्रतीक्षा के अपने सबसे ऊंचे बिंदुओं तक पहुंचने से पहले निराशा के अपने सबसे निचले बिंदुओं तक गिर गया। जॉन ई. हार्टले ने कहा, ''उसका भाषण व्यक्तिगत विलाप की भाषा से अत्यधिक प्रभावित है, विशेषकर वह वाला भाग जिसमें विलाप करने वाला अपने शत्रु के उसे कष्ट देने के अथक प्रयासों से अपनी पीड़ा को व्यक्त करता है।''[1] फ्रांसिस आई. एंडरसन ने इस अध्याय की बातों की अच्छी समीक्षा की है:

> इस भाषण में अय्यूब का निडर विश्वास इन प्रसिद्ध शब्दों में अपने चरम पर पहुंचता है, *मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है* (आयत 25)। वह अपने मित्रों के उलाहनों से निराशा (आयतें 2-6), परमेश्वर द्वारा उसके विनाश (7-12), और पूरी तरह से त्याग दिए जाने की अपनी भावना की अवस्था से इस उंचाई पर छलांग लगाता है (13-22)। इस अंधेरी पृष्ठभूमि के सामने अंतिम सहायता का उसका निश्चय (23-29) और भी तेजी से चमकता है।[2]

## ''तुम कब तक ऐसी बातों से मुझे सताते रहोगे?'' (19:1-6)

**[1]तब अय्यूब ने कहा, [2]''तुम कब तक मेरे प्राण को दु:ख देते रहोगे; और बातों से मुझे चूर चूर करोगे? [3]इन दसों बार तुम लोग मेरी निन्दा ही करते रहे, तुम्हें लज्जा नहीं आती कि तुम मेरे साथ कठोरता का बरताव करते हो? [4]मान लिया कि मुझ से भूल हुई, तौभी वह भूल तो मेरे ही सिर पर रहेगी। [5]यदि तुम सचमुच मेरे विरुद्ध अपनी बड़ाई करते हो और प्रमाण देकर मेरी निन्दा करते हो, [6]तो यह जान लो कि परमेश्वर ने मुझे गिरा दिया है, और मुझे अपने जाल में फँसा लिया है।''**

**आयतें 1, 2. अय्यूब ने** उत्तर दिया, ''**तुम कब तक मेरे प्राण को दु:ख देते रहोगे; और बातों से मुझे चूर-चूर करोगे?**'' अय्यूब ने बहुवचन ''तुम'' के साथ परन्तु विशेषकर बिलदद को ध्यान में रखकर सभी मित्रों को सम्बोधित किया। ''कब तक'' बिलदद के भाषणों के आरम्भ की नकल है (8:2; 18:2)। प्रश्न के पहले भाग का अनुवाद मूलतया ''तुम लोग *मेरे प्राण* को कब तक सताओगे'' हो सकता है। ''प्राण'' (*nepesh, नेपेश*) मनुष्य के भीतरी मनुष्यत्व या पूर्ण व्यक्ति का संकेत हो सकता है।[3]

''दु:ख देते'' शब्द मूल शब्द *yagah* (*यागाह*) से लिया गया है जो गहरे निजी शोक को दर्शाता है। यह शब्द विलापगीत में बहुत बार मिलता है, जहां इसका अनुवाद ''दु:ख,'' ''पीड़ा,'' और ''दु:ख देना'' हुआ है (विलापगीत 1:4, 5, 12; 3:32, 33)। ''चूर-चूर'' शब्द (*daka', डाका*) संकेत देता है कि अय्यूब के मित्र ''पीड़ा सहने के उसके धैर्य को गिरा रहे

थे। मनोवैज्ञानिक रूप में [इब्रानी शब्द] व्यर्थता और निरर्थकता की उन भावनाओं को दर्शाता है जिनसे विपत्ति आने पर व्यक्ति परेशान हो जाता है।''[4] यहोवा के सेवक के दु:खों के वर्णन के लिए यशायाह ने इसी शब्द का इस्तेमाल किया: ''वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया'' (यशायाह 53:5)।

**आयत 3. ''इन दसों बार तुम लोग मेरी निन्दा ही करते रहे।''** ''दसों'' को शब्दश: नहीं लिया जाना चाहिए। इसका अर्थ सम्पूर्णता है जैसे अपने ससुर लाबान के बारे में याकूब ने कहा: ''और तुम्हारे पिता ने मुझ से छल करके मेरी मजदूरी को दस बार बदल दिया; परन्तु परमेश्वर ने उसको मेरी हानि करने नहीं दिया'' (उत्पत्ति 31:7)। शब्द का सही उपयोग इस्राएलियों को यहोवा की डांट में मिलता है: ''उन सब लोगों ने जिन्हों ने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार मेरी परीक्षा ली, और मेरी बातें नहीं मानी'' (गिनती 14:22)। ''निंदा'' (*kalam, कालाम*) का अर्थ है ''किसी को 'शर्मिंदा या अपमानित करना' विशेषकर लोगों के सामने ठट्ठा उड़ाकर।''[5]

**आयत 4.** अय्यूब ने इस सम्भावना को मान लिया कि उससे **भूल हुई** थी (6:24), परन्तु वह इस बात पर डटा रहा कि उसकी **भूल** चाहे जो भी हुई हो, उसके दु:ख की घोरता के अनुरूप नहीं थी।

**आयतें 5, 6.** मित्र चाहे अय्यूब के विरुद्ध अपने आरोपों को **प्रमाण** देकर साबित भी कर सकते थे पर फिर भी यह उनके दावों का समर्थन नहीं करता कि दोषी *हमेशा* दु:ख पाते हैं और धर्मी *हमेशा* बलवंत होते हैं। अय्यूब अपने जीवन की सबसे अधिक मायूसी में था, जब उसने परमेश्वर के ऊपर आरोप लगाया: **''परमेश्वर ने मुझे गिरा दिया है, और मुझे अपने जाल में फँसा लिया है।''**

''गिरा दिया'' मूल शब्द *'awath* (*आवाथ*) से लिया गया है जिसका अनुवाद ''झुकाना,'' ''झूठा ठहराना,'' या ''धोखेबाज'' होना हो सकता है।[6] अपने पहले भाषण में बिलदद ने दो बार इसी शब्द का इस्तेमाल किया था जब उसने पूछा, ''क्या परमेश्वर न्याय करता है और क्या सर्वशक्तिमान धर्म को उलटा करता है'' (8:3; देखें 34:12)। ''कानूनी तौर पर यह अनुचित, पक्षपाती निर्णय को दर्शाता है जो प्रतिवादी को उसका न्यायसंगत अधिकार नहीं देता'' (तुलना भजन संहिता 119:78; विलापगीत 3:36)।''[7]

''जाल'' (*matsod, माटसोड*) शब्द अध्याय 18 में बिलदद के पिछले भाषण की याद दिलाता है। वहां पर उसने शिकार करने के कई यंत्रों का उल्लेख किया था जिसमें दुष्ट मनुष्य खुद को फंसा लेता है (18:8–10 पर टिप्पणियां देखें)। परन्तु अय्यूब ने यह स्पष्ट कर दिया कि अपने ऊपर लगे फंदे के लिए वह जिम्मेदार नहीं है। इसके बजाय इसका जिम्मेदार परमेश्वर था।

## ''परमेश्वर ने मुझे अपमानित किया है'' (19:7–12)

**7''देखो, मैं उपद्रव! उपद्रव! यों चिल्लाता रहता हूँ, परन्तु कोई नहीं सुनता; मैं सहायता के लिये दोहाई देता रहता हूँ, परन्तु कोई न्याय नहीं करता। 8उसने मेरे मार्ग को ऐसा रूंधा है कि मैं आगे चल नहीं सकता, और मेरी डगरें अन्धेरी कर दी हैं। 9मेरा वैभव उसने हर लिया**

**है, और मेरे सिर पर से मुकुट उतार दिया है। [10]उसने चारों ओर से मुझे तोड़ दिया, बस मैं जाता रहा, और मेरी आशा को उसने वृक्ष के समान उखाड़ डाला है। [11]उसने मुझ पर अपना क्रोध भड़काया है और अपने शत्रुओं में मुझे गिनता है। [12]उसके दल इकट्ठे होकर मेरे विरुद्ध मोर्चा बाँधते हैं, और मेरे डेरे के चारों ओर छावनी डालते हैं।''**

इस पद्य में अय्यूब ने इस भावना से कि परमेश्वर ने उसे प्रताड़ित किया है अपनी पीड़ा को विस्तार से बताया। होमेर हेली ने कहा है कि ''यह सहायता के लिए पुकार थी, जो उसके अंदर की पीड़ा से निकली हुई लगती है।''[8]

**आयत 7.** यह आयत उस निराशा और बेबसी को दिखाती है जो अपनी अत्यधिक पीड़ा के कारण अय्यूब को थी। आर. लेयर्ड हैरिस ने कहा है कि अनुवाद हुए शब्द **उपद्रव** (*chamas, चमस*) ''का इस्तेमाल हमेशा पापपूर्ण हिंसा के सम्बन्ध में ही होता है। यह प्राकृतिक आपदाओं की हिंसा के सम्बन्ध में नहीं है।''[9] यह **न्याय** का विपरीत शब्द है।

**आयतें 8-12.** अय्यूब ने इन आयतों में परमेश्वर पर यह आरोप लगाया:

1. ''**उसने मेरे मार्ग को ... रूंधा है।**'' जिस प्रकार से राजमिस्त्री किसी दीवार का निर्माण करता है उसी प्रकार से परमेश्वर ने अय्यूब के ''मार्ग'' में बाधा डाली ताकि वह उससे गुजर न सके।
2. ''**मेरी डगरें अन्धेरी कर दी हैं।**'' परमेश्वर ने अय्यूब का मार्ग अंधकार और सुनसान कर दिया था। अय्यूब को यह पता नहीं था कि वह किधर को जाए और किधर को मुड़े (देखें 29:2, 3)।
3. ''**मेरा वैभव उसने हर लिया है, और मेरे सिर पर से मुकुट उतार दिया है।**'' परमेश्वर ने अय्यूब की बड़ी सम्पत्ति और समाज में सम्मानित अगुवे के उसके पद को छीन लिया था। अय्यूब को लगा जैसे किसी राजा को उसकी गद्दी से उतार दिया गया हो।
4. ''**उसने चारों ओर से मुझे तोड़ दिया।**'' किसी सेना के किले तोड़ने वाले बुर्जों के साथ नगर की शहरपनाह को ढाह देने की तरह (16:14), परमेश्वर ने अय्यूब के जीवन को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया।
5. ''**मेरी आशा को उसने वृक्ष के समान उखाड़ डाला है।**'' ''वृक्ष'' के विपरीत जिसे काट डालने पर नये सिरे से अकुंरित होने के लिए उसके ठूंठ को छोड़ दिया हो (14:7-9) अय्यूब की आशा को परमेश्वर की ओर से पूरी तरह से ''उखाड़ डाला'' गया था।
6. ''**उसने मुझ पर अपना क्रोध भड़काया है।**'' अय्यूब ने स्वयं को परमेश्वर के जलते क्रोध के शिकार के रूप में देखा।
7. ''**उसके दल इकट्ठे होकर मेरे विरुद्ध मोर्चा बाँधते हैं, और मेरे डेरे के चारों ओर छावनी डालते हैं।**'' अय्यूब को लगा कि जैसे परमेश्वर की सेना (शायद मित्रों) ने उसे पकड़ने के लिए अपने घेरे बनाकर (तर्क) किसी नगर को घेरा डालने की तरह उसे घेर लिया था।

इन आरोपों से अय्यूब की परमेश्वर से वैराग की गहरी भावनाओं को दिखाया गया। उसे लगा कि जैसे उसके जीवन की दिशा ही बिल्कुल बदल गई है। उसे और किसी व्याख्या का पता नहीं है इसलिए इस सब के पीछे परमेश्वर ही होगा। सेमुएल कॉक्स ने कहा है, ''मानवीय जीवन में किसी के लिए भी जो अपने आपको परमेश्वर का त्यागा हुआ और अभिषप्त मानता हो, इस दुर्गति और निराशा से बड़ी त्रासदी नहीं है – जब उन्हें पता हो कि किसने उससे जो कभी उम्मीद का दामन इतनी बुरी तरह से छोड़ चुका हो कि अब उसे उसकी परवाह ही न हो बात की हो।''[10]

## ''मित्र और मेरी जान पहचान वाले मुझ से घृणा करते हैं'' (19:13–22)

**[13]''उसने मेरे भाइयों को मुझ से दूर किया है, और जो मेरी जान पहचान के थे, वे बिल्कुल अनजान हो गए हैं। [14]मेरे कुटुम्बी मुझे छोड़ गए हैं, और मेरे परम मित्र मुझे भूल गए हैं। [15]जो मेरे घर में रहा करते थे, वे, वरन् मेरी दासियाँ भी मुझे अनजाना गिनने लगी हैं। उनकी दृष्टि में मैं परदेशी हो गया हूँ। [16]जब मैं अपने दास को बुलाता हूँ, तब वह नहीं बोलता; मुझे उससे गिड़गिड़ाना पड़ता है। [17]मेरी साँस मेरी स्त्री को और मेरी गन्ध मेरे भाइयों की दृष्टि में घिनौनी लगती है। [18]लड़के भी मुझे तुच्छ जानते हैं; और जब मैं उठने लगता तब वे मेरे विरुद्ध बोलते हैं। [19]मेरे सब परम मित्र मुझ से द्वेष रखते हैं, और जिन से मैं ने प्रेम किया वे पलटकर मेरे विरोधी हो गए हैं। [20]मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियों से सट गए हैं, और मैं मृत्यु से बाल-बाल बच गया हूँ। [21]हे मेरे मित्रो! मुझ पर दया करो, दया, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे मारा है। [22]तुम परमेश्वर के समान क्यों मेरे पीछे पड़े हो? तुम मेरे मांस से क्यों तृप्त नहीं हुए?''**

अय्यूब को केवल यही नहीं लगा कि परमेश्वर की ओर से उसे त्याग दिया गया है बल्कि उसके मित्रों और उसके रिश्तेदारों ने भी उसे छोड़ दिया। सेमुएल कॉक्स ने लिखा है,

> परन्तु चाहे इतना भयानक न ही हो [परमेश्वर की ओर से त्यागे जाना] इस पर सवाल उठाया जा सकता है कि मनुष्य की ओर से त्यागे जाना, मानवीय सहानुभूति से काटे जाना, इतना मार्मिक और संवेदी शोक नहीं है। ... लोग अपने साथियों की नफ़रत और उपेक्षा में जीवित नहीं रह सकते।[11]

हेली ने अय्यूब की स्थिति को अपनी पुस्तक में सबसे निचले दर्जे की बताया।[12]

अय्यूब ने उन लोगों को बारह श्रेणियों में बांटा है जो उसे घिनौना मानते थे: (1) ''मेरे भाई,'' (2) ''मेरे जान पहचान वाले,'' (3) ''मेरे रिश्तेदार,'' (4) ''मेरे नज़दीकी दोस्त,'' (5) ''मेरे घर में रहने वाले,'' (6) ''मेरी नौकरानियां,'' (7) ''मेरा नौकर,'' (8) ''मेरी पत्नी,'' (9) ''मेरे अपने भाई,'' (10) ''मेरे छोटे बच्चे,'' (11) ''मेरे साथी'' और (12) ''जिनसे मैं प्यार करता हूं।'' हेली का अवलोकन है, ''जब हम इन सबको मिलाकर देखते हैं जिन्हें अय्यूब ने माना कि उन्होंने उसे छोड़ दिया है ... तो हम पूछते हैं कि फिर रह कौन गया है जिसके पास हम जा सकते हैं। केवल परमेश्वर ही है जिसे उसने माना कि उसके विरोध में है और जिसके साथ वह बना रहा।''[13]

**आयतें 13, 14.** ये आयतें आपस में मिलती जुलती लगती हैं। **भाइयों**[14] शब्द **कुटुम्बी** से मेल खाता है, जबकि **जान पहचान के** शब्द परम-मित्र के साथ मेल खाता है। आयत 14 वाले कुटुम्बी आयत 13 वाले जान पहचान वालों से अधिक परिचित हैं।

**आयत 15. जो मेरे घर में रहा करते थे** का अनुवाद क्रिया शब्द *gur* (*गोर*) के कृदंत रूप का अनुवाद है और इसका अर्थ ''अतिथि'' है (NIV; NRSV)। यह तथ्य कि इन परदेसियों ने अय्यूब के साथ **अनजाना** और **परदेसी** जैसा व्यवहार किया था वास्तव में विडम्बना से भरा है। बाद के एक भाषण में अय्यूब ने कहा, ''परदेशी [*ger, गर*] को सड़क पर टिकना न पड़ता था; मैं बटोही के लिये अपना द्वार खुला रखता था'' (31:32)।

**आयत 16.** एक भरोसेमंद **दास** ने अपने स्वामी को तुरन्त जवाब दिया। आम तौर पर जब वह अपने स्वामी के हाव-भाव पर ध्यान रखता और उसके बिना कुछ कहे ही उसकी बात को मान लेता: ''जैसे दासों की आंखें अपने स्वामियों के हाथ की ओर लगी रहती हैं'' (भजन संहिता 123:2)। पर अय्यूब के दास तब भी नहीं **बोलते** थे, जब वह **बुलाता** था।

**आयत 17.** बीमारी के कारण अय्यूब से **गंध** आने लगी और यह उसकी **स्त्री** को **घिनौनी** लगती थी (देखें 2:9)। **मेरे भाइयों** मूलतया ''मेरी [माता की] कोख के पुत्रों'' है (देखें 3:10। अय्यूब के परिवार के सबसे नज़दीकी लोगों अर्थात उसकी पत्नी और भाइयों ने उससे अपना मुंह फेर लिया (देखें भजन संहिता 69:8)।

**आयत 18.** एक समय था जब छोटे बड़े सब अय्यूब का आदर किया करते थे; वे उसके सम्मान में खड़े हो जाते, उसके सामने खामोश हो जाते और उसके निर्देश को सुना करते थे (29:7-11)। परन्तु अब **लड़के भी** जिन्हें हर छोटे बड़े का आदर करना सिखाया गया था, उसे ठट्ठा करते थे।

**आयत 19. मेरे सब परम मित्र** का अनुवाद ''मित्रों के मेरे सरकल के सब लोग'' या ''सभा के सब लोग'' हो सकता था। हार्टले की टिप्पणी है, ''ये वे लोग हैं जो स्थानीय *पंचायत* के सदस्यों के रूप में बैठा करते थे और जिनके साथ वह आत्मविश्वास के साथ बड़े-बड़े मसलों पर चर्चा किया करता था।''[15]

**आयत 20.** अपने परिवार और मित्रों से पूरी तरह से अलग होने पर विलाप करने के बाद अय्यूब अपनी दयनीय शारीरिक अवस्था की ओर लौट आया। उसमें **खाल और ... हड्डियां** ही बची थीं (देखें 16:8; 33:21)। यह अचम्भे की बात थी कि अभी वह जीवित था!

**आयत 21. ''हे मेरे मित्रो! मुझ पर दया करो, दया, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे मारा है।''** हेली ने कहा कि यह आयत पुस्तक में ''सम्भवतया सबसे दयनीय पुकार है।''[16] ''दया करो'' (*chanan, चानान*) किसी पर ध्यान करके उस पर दया करते हुए उसके प्रति उसका समर्थन दिखाना या अनुग्रहकारी होना है।[17] अपने साथी लोगों की ओर से सहानुभूति की किसी बात के न होने से अय्यूब का अपना अनवरत दु:ख बढ़ता हुआ लगा।

**आयत 22.** मित्रों ने उसे दिलासा देने के बजाय भाषण दे देकर उस पर आक्रमण किए (19:28)। अय्यूब ने उन्हें **परमेश्वर** और अपने ऊपर उसी के आक्रमणों से मिलाया। उन्होंने शिकार की तलाश में जंगली जानवरों जैसा काम किया था (16:9)।

## ''मैं अपने छुड़ाने वाले पर भरोसा रखूंगा'' ( 19:23-29 )

**[23]''भला होता, कि मेरी बातें लिखी जातीं; भला होता, कि वे पुस्तक में लिखी जातीं, [24]और लोहे की टाँकी और सीसे से वे सदा के लिये चट्टान पर खोदी जातीं। [25]मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा; [26]और अपनी खाल के इस प्रकार नष्ट हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा। [27]उसका दर्शन मैं आप अपनी आँखों से अपने लिये करूँगा, और कोई दूसरा नहीं। यद्यपि मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर चूर-चूर भी हो जाए, [28]तौभी मुझ में तो धर्म का मूल पाया जाता है! और तुम जो कहते हो हम इसको कैसे सताएँ! [29]तो तुम तलवार से डरो, क्योंकि क्रोध का परिणाम तलवार का दण्ड है, जिससे तुम जान लो कि न्याय होता है।''**

पुस्तक में अय्यूब के विलाप के इस सबसे निचले बिंदु के तुरन्त बाद विश्वास और अनुमोदन के आश्वासन मिलते हैं। कॉक्स ने कहा कि यह पद्य ''ध्यान मांगता है क्योंकि यह अंधकार से ज्योति जैसे संदर्भ से निकलता है; मैदान के सामने सीधे पहाड़ की तरह यह इससे ऊंचा उठकर और ऊंचा हो जाता है।''[18] इन आयतों में वचन से सम्बन्धित कुछ कठिनाइयां हैं, परन्तु एंडरसन ने बिल्कुल सही लिखा है, ''अंत में अय्यूब के न्याय की निश्चितता के वचन की कठिनाइयों की स्थिरता से डुबोने की आवश्यकता नहीं है।''[19] यह पद्य बड़ी सावधानी से व्याख्या किए जाने की मांग करता है।[20]

**आयत 23.** भाषा इस बात का संकेत देती है कि अय्यूब कोई महत्वपूर्ण बात कहने वाला था। उसने इच्छा जताई कि उसकी **बातें** भावी पीढ़ी के लिए **लिखी** जाएं। **पुस्तक** (*seper, सेपेर*) शब्द किसी भी प्रकार के लिखित दस्तावेज के लिए हो सकता है। इसे स्क्रॉल (NIV; NCV) या ''स्मारक'' (NJB; NLT) के रूप में समझा जा सकता है।

**आयत 24.** अय्यूब ने चाहा कि जो बातें वह कहने वाला था उन्हें पक्के तौर पर लिखा जाए: **''और लोहे की टाँकी और सीसे से वे सदा के लिये चट्टान पर खोदी जातीं!''** प्राचीन निकट पूर्व के लोग कोई नियम बनाने, सीमाओं को चिह्नित करने, और किसी बड़ी घटना और प्राप्ति को यादगार बनाने के लिए पत्थर के स्मारक खड़े करते थे, जिन्हें *stelae* (स्तम्भ) कहा जाता था। शिलालेखों को कई बार ''लोहे की छेनी से तराशकर उनमें सिक्का भरा जाता'' था (NLT)।[21]

**आयत 25. ''मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।''** ''मुझे तो'' मूल इब्रानी भाषा में बल देने की स्थिति में रखा गया है। इसका अर्थ यह है कि अगली बात बोलने वाले के कथन की निश्चितता से जताई जाती है। अय्यूब ने आगे कहा, ''निश्चय है।'' उसने यह नहीं कहा, ''मुझे आशा है'' या ''मेरा विचार है,'' बल्कि उसने कहा कि ''मुझे तो निश्चय है''! जॉन डी. डब्ल्यू. वाटस ने समझाया है:

> अय्यूब अब निजी ज्ञान के पक्के तथ्य को दृढ़ता से कहता है: ''मुझे पक्का पता है।'' निश्चित्ता को व्यक्त करते हुए क्रिया शब्द पूर्णकाल में है। क्रिया शब्द ''जानना'' को किसी तथ्य के ज्ञान को व्यक्त कर सकता है परन्तु इसका इस्तेमाल अधिकतर किसी

> व्यक्ति को जानने को बताने के लिए किया जाता है।[22]

हार्टले ने टिप्पणी की है:

> अय्यूब ने बड़ी बेरुखी से अपनी महत्वाकांक्षी सोच को अचानक बंद करके अपने गहरे विश्वास को प्रकट किया। *मुझे तो निश्चय है* ... के शीर्षक के साथ अय्यूब पुष्टि करता है कि उसका विश्वास दृढ़ और निर्णायक है। अभी-अभी जहां वह काल्पनिक तौर पर बोल रहा था, वहीं अब भरोसे के साथ बात कर रहा था।[23]

''छुड़ाने वाला'' शब्द (*Go'el, गोयल*) का अनुवाद ''रक्षक'' (NJPSV), ''बदला लेने वाला'' (JB), और ''बचाने वाला'' (NJB) भी हुआ है। मेरविन एच. पॉप ने इस शब्द की शानदार समीक्षा देते हुए यह कहा:

> यह किसी नज़दीकी रिश्तेदार का संकेत देता है जो किसी कुल बैर में [मरने वाले] को उसके लिए वारिस दिलाने के लिए विधवा सहित [रूत 4:4-6]। वैसा ही बदला लेने [व्यवस्थाविवरण 19:6-12; 2 शमूएल 14:11] के लिए अपने रिश्तेदार को गुलामी से छुड़ाकर उसकी देखभाल करने [लैव्यव्यवस्था 25:48] या परिवार की सम्पत्ति को फिर से प्राप्त करने [लैव्यव्यवस्था 25:25] को बाध्य था। इस प्रकार *गोयल* विधवा और अनाथ का बचाने वाला, अर्थात दलितों का रक्षक है [नीतिवचन 23:10-11]।[24]

कुछ टीकाकारों ने जहां छुड़ाने वाले को परमेश्वर के अलावा किसी घटक के रूप में समझा है परन्तु वहीं रॉबर्ट गोर्डिस ने इसकी पहचान स्वयं परमेश्वर को छोड़ किसी और के साथ न करने की दलील दी है। उसका मानना है कि इब्रानी पाठक किसी रहस्यमयी व्यक्ति की कल्पना नहीं कर सकता था जिसमें न्याय के लिए परमेश्वर को और अय्यूब को बुलाने और अय्यूब का न्याय करने की सामर्थ हो। उसने कहा:

> बाइबल के लेखक के विचार की ऐसी व्याख्या असम्भव है क्योंकि यह विचार कि कोई परमेश्वर से अधिक शक्तिशाली हो सकता है किसी इब्रानी विचारक के लिए परमेश्वर की निंदा से कहीं बढ़कर होना था और अपने आप में यह मूर्खता की बात थी।[25]

गोर्डिस ने यह भी लिखा है कि अय्यूब के सभी भाषण एक सामर्थ का परमेश्वर और न्याय तथा प्रेम का परमेश्वर के दो विषय प्वायंट/सुर के ढंग में एक-दूसरे के आधार पर बने हैं, इस वचन में उन विषयों को एक बड़े चरम में एक किया गया है।[26]

''मेरा छुड़ाने वाला *जीवित* है''! बल अय्यूब के अस्थाई होने की तुलना में छुड़ाने वाले के स्थाई होने में दिया गया है। अय्यूब को मालूम था कि वह मर जाएगा परन्तु उसका छुड़ाने वाला उसके बाद जीवित रहेगा। जॉर्ज बुचनन ग्रेअ का कहना है कि ''जो व्यक्ति सदैव जीवित रहता है वह सदा के लिए अय्यूब को निर्दोष ठहराएगा।''[27] यह महत्वपूर्ण है कि यशायाह ने ''शांति की पुस्तक'' में छुड़ाने वाले के रूप में परमेश्वर पर बड़ा ज़ोर दिया (यशायाह 40-66)। उन अध्यायों में परमेश्वर को तेरह बार ''छुड़ाने वाला'' कहा गया है (यशायाह 41:14; 43:14; 44:6, 24; 47:4; 48:17; 49:7, 26; 54:5, 8; 59:20; 60:16; 63:16)।

‘‘वह अंत में पृथ्वी पर खड़ा होगा’’ सम्भवतया छुड़ाने वाले के चर्चा किए जा रहे विषयों पर अपनी बात कह रहा है। हार्टले का मानना था कि यह अय्यूब के मरने से पहले होना था।[28] इसके विपरीत एच. एच. रोअले ने कहा है कि ‘‘इसका अर्थ यह लगता है कि बहुत सम्भावना है कि उसे मृत्यु के बाद निर्दोष ठहराए जाने की आशा थी।’’[29]

**आयतें 26, 27. ‘‘और अपनी खाल के इस प्रकार नष्ट हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा। उसका दर्शन मैं आप अपनी आँखों से अपने लिये करूँगा, और कोई दूसरा नहीं। यद्यपि मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर चूर चूर भी हो जाए।’’** व्याकरणीय, वाक्य रचना तथा व्याख्या की समस्याओं के कारण इन आयतों की व्याख्या कठिन है। व्याख्याकर्त्ताओं द्वारा आम तौर पर इस पर चर्चा होती है कि पूर्वसर्गिक वाक्यांश ‘‘शरीर में होकर’’ (*mibbeśari, मिब्बेसरी*) का अनुवाद क्या किया जाए। यह तथ्य है कि अय्यूब ने ‘‘परमेश्वर का दर्शन’’ पाने की उम्मीद की; संदर्भ से यह स्पष्ट है। परन्तु समस्या ‘‘कब?’’ के प्रश्न की है। क्या यह उसके जीते जी होना था या उसकी मृत्यु के बाद?

इस बिंदु पर ए. बी. डेविडसन ने एक शानदार चर्चा लिखी है। उसने जीवन के बाद के विचार को शामिल करने के लिए इस वाक्यांश के अपने अनुवाद के समर्थन में कई तर्क दिए: (1) अय्यूब का मन इस विचार पर लगा था कि वह परमेश्वर को देखेगा; मुख्य बात यह नहीं है कि यहां या कहीं और। (2) अय्यूब ने इस जीवन में स्वास्थ्य और समृद्धि के वापस मिलने की उम्मीद नहीं की। (3) *गोयल* (‘‘छुड़ाने वाला’’) शब्द स्वाभाविक रूप में मरे हुओं को निर्दोष ठहराने वाले के हवाले का सुझाव देता है। (4) आयत 25 में विशेषण शब्द *chay* (*चेय*) जिसका अक्षरशः अर्थ ‘‘जीवित’’ है, *गोयल* के जीवित और अय्यूब के मृत होने के बीच अलंकार का सुझाव देता है। (5) अय्यूब आम तौर पर विचारों को पहले फैंक देता या अस्पष्ट रूप में जिसे बाद में वह विस्तार से बताता। (6) यह मानने का कोई आधार नहीं है कि अय्यूब ने परमेश्वर के विशुद्ध आत्मिक दर्शन पर विचार किया।[30] डेविसन का निष्कर्ष है:

> शांति में परमेश्वर के साथ अपनी मुलाकात का दर्शन अय्यूब के मन में इतना समाया हुआ था, कि शांत परिस्थिति में दिमाग में आने वाली बातें, जो एकदम से हमारे दिमाग में आती हैं, अय्यूब के मन में नहीं थीं। फिर भी मुझे नहीं मालूम कि अय्यूब के मन में वे सारी धार्मिक बातें थीं जिन्हें हम भविष्य के जीवन के साथ जोड़ते हैं।[31]

बिल्ली कैनथ स्मिथ ने अय्यूब की पुस्तक के भावी जीवन के विषय को डॉक्टरी के शोध निबंध का आधार बनाया। इस वचन से सम्बन्धित उसका सुविज्ञ निष्कर्ष यह था कि अय्यूब को लगा कि अपनी मृत्यु के बाद, वह परमेश्वर को देखेगा, उसका निर्दोष होना घोषित होगा और पृथ्वी की सारी गलतियां सुधार ली जाएंगी।[32] मेरा निष्कर्ष यह है कि भावी जीवन का एक होनहार विचार अय्यूब की पुस्तक में मिलता है।

इन आयतों में ‘‘देखना’’/‘‘देखो’’ के लिए इब्रानी क्रिया शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। पहला (*chazah, चज़ह*) दोनों आयतों में आता है। यह शब्द आम तौर पर ‘‘दर्शन में देखना’’ का संकेत देता है। कॉक्स में ‘‘आत्मिक दर्शन’’ पर मूल में ज़ोर देने पर ध्यान दिलाया।[33] यह शब्द *ra’ah* (*राह*) के साथ मेल खाते हुए मिलता है इसलिए शायद अधिक बल देखने के *तरीके*

के बजाय *तथ्य* पर दिया जाना चाहिए।[34]

इन आयतों में अय्यूब परमेश्वर द्वारा उसे निर्दोष ठहराने से सम्बन्धित आशा के ऊंचे पठार पर पहुंच गया। यह "विश्वास की चरम सीमा" अय्यूब पर अपने प्रभाव में केवल क्षणिक थी। शायद इसने उसे तब तक सम्भाले रखा, जब तक परमेश्वर ने संगति के अनुभव में उसे देखने की उसकी विनती को मान नहीं लिया और इस प्रकार से निश्चित रूप में जान लिया कि परमेश्वर ही उसका छुड़ाने वाला है। इससे परमेश्वर के पूर्ण दर्शन का मार्ग तैयार हो गया जो पुस्तक के चरम के रूप में यहोवा के भाषणों में आने वाला था।

**आयतें 28, 29.** ये आयतें सशर्त ("यदि ... तो") बात कहती हैं। **"तौभी मुझ में तो धर्म का मूल पाया जाता है! और तुम जो कहते हो हम इसको कैसे सताएँ!"** अय्यूब ने अपने मित्रों को उनकी उतावली, उसके विरुद्ध सतही निर्णय लेने के सम्बन्ध में चेतावनी दी। क्रिया शब्द "सताएं" (*radap, राडाप*) को आयत 22 से दोहराया गया है जो इसी विषय पर बात करती है। किसी पर झूठा आरोप लगाना गम्भीर अपराध था (निर्गमन 20:16; 23:1, 7)।

**"तो तुम तलवार से डरो, क्योंकि क्रोध का परिणाम तलवार का दण्ड है, जिससे तुम जान लो कि न्याय होता है।"** अय्यूब पर मित्रों का न्याय उन पर परमेश्वर के न्याय का कारण बन सकता था। "तलवार" उन घातक प्रहारों का प्रतीक है जो परमेश्वर अपने शत्रुओं के विरुद्ध चलाता है (लैव्यव्यवस्था 26:25; व्यवस्थाविवरण 32:41, 42; यशायाह 66:16)।

## प्रासंगिकता

### हमें पक्का क्या मालूम है? (अध्याय 19)

फ्रांसीसी भौतिक विज्ञानी जीन बैपटिस्टे लिरॉय को 1789 में लिखे अपने एक पत्र में बैंजामन फ्रैंक्लिन ने एक बात लिखी जो वर्षों से अमर हो गई है। अपने मित्रों को लिखते हुए, बेंन फ्रैंक्लिन ने कहा, "हमारा विधान वास्तव में काम करता है; हर बात यह वचन देती हुई प्रतीत होती है कि यह हमेशा तक रहेगी; पर इस संसार में *सिवाय मृत्यु और के कुछ भी निश्चित नहीं है।*"[35]

1789 में अमेरिका एक नया नया बना देश था और उसमें लोकतंत्र अभी साबित नहीं हुआ था कि यह काम करेगा, अभी इसे अधिक समय नहीं हुआ था। फिर भी आशावादी लोगों को उम्मीद थी कि यह अपने आपको चला लेंगे। पर बैंजामिन फ्रैंक्लिन को इतना निश्चय था कि हर अमेरिकी मर जाएगा और उन पर कर भी लगता रहेगा। समय ने साबित कर दिया है कि करों के बारे में भी फ्रैंक्लिन सही था उनके विषय को छोड़ जो प्रभु के लौटने के समय जीवित होंगे, मृत्यु के बारे में भी फ्रैंक्लिन सही था। इब्रानियों 9:27 इस नियम को बड़ी स्पष्टता से बताता है। पर बेंन फ्रैंक्लिन की यह बात गलत थी कि "[और] कुछ भी निश्चित नहीं है।"

कुछ विषयों के बारे में संदेह करना मानवीय स्वभाव में पाया जाता है पर संदेह आम होते हैं। परमेश्वर ने पचहत्तर साल के अब्राहम को बताया कि वह उसे बच्चा देने वाला है। परमेश्वर ने यह बात कही थी, और वह झूठ नहीं बोल सकता। उत्पत्ति 15:6 कहता है कि अब्राहम ने विश्वास किया। परन्तु इसका दो आयतों के बाद बाइबल कहती है कि उसके बाद अब्राहम के

अपने संदेह थे। जब सारा ने उस प्रतिज्ञा के बारे में सुना तो उसे हंसी आ गई, क्योंकि उसके भी अपने संदेह थे। गिदोन के अपने संदेह थे कि परमेश्वर नेतृत्व की भूमिका को देकर जो परमेश्वर उसे देने को कह रहा था, वह सचमुच में उसके साथ होगा भी या नहीं। गिदोन ने यह विश्वास करने से पहले कि परमेश्वर अपना वायदा पूरा करेगा, कई चिह्न दिखाने को कह दिया (न्यायियों 6:17)। आरम्भ में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को यकीन था कि यीशु परमेश्वर का मेमना है (यूहन्ना 1:36); परन्तु बाद में जब वह जेल में था तो यूहन्ना के मन में संदेह आ गए (मत्ती 11:2, 3)। प्रेरितों के काम 10 में परमेश्वर को पतरस को यकीन दिलाने के लिए कि उसके लिए वह करने के लिए जाना बिल्कुल सही था जो परमेश्वर ने उसे करने को कहा था, तीन बार उससे दिखाना और उसे बात करनी पड़ी।

संदेह आम है और उन संदेहों से संघर्ष करना परेशान करने वाला हो सकता है। हम निश्चित रूप में क्या जानते हैं? अपना अनन्त भविष्य हम बाइबल के किन नियमों के आधार पर रखेंगे और सौ फीसदी यकीन से कह सकेंगे कि हम पक्का जानते हैं? हमारा विश्वास और गहरा हो जाता है जब हम अपने संदेहों से लड़ते और अंत में उस सच्चाई तक पहुंच जाते हैं जिस पर हमारा विश्वास होता है। अय्यूब संदेहों से संघर्ष करने का उत्तम उदाहरण है। अपने संघर्षों से अय्यूब ने अंत में यह तय कर पाना था कि उसे निश्चय रूप में क्या पता है। अपने छुड़ाने वाले के बारे में उसकी निश्चितता में उसे अपनी भयानक परीक्षा में स्थिर रखकर उसमें से निकालना था।

*अय्यूब के संघर्ष।* अठारह अध्यायों तक अय्यूब उन सभी भयानक बातों से संघर्ष करता और लड़ता रहा, जो उसके साथ हुईं। चाहे वह सच्चा, परमेश्वर का भय मानने वाला था पर ऐसा नहीं था कि अय्यूब के ऊपर कोई त्रासदी नहीं आ सकती थी। बिना चेतावनी के उसने वह सब खो दिया जो उसके लिए कीमती था। फिर दर्दनाक फोड़ों के साथ उसके शरीर के ऊपर आक्रमण हुआ। उसके मित्र उसे शांति देने के लिए आए थे। एक सप्ताह की खामोशी के बाद वे उस पर निर्दयतापूर्वक पाप करने का आरोप लगाने लगे जिसके कारण परमेश्वर ने उसे दण्ड दिया था। अय्यूब ने कहा, "जो मेरी जान पहचान के थे, वे बिल्कुल अनजान हो गए हैं। मेरे कुटुम्बी मुझे छोड़ गए हैं, और मेरे परम मित्र मुझे भूल गए हैं" (19:13, 14)। दु:ख में डूबी अय्यूब की पत्नी ने उससे पहले उससे कहा था कि वह अपनी खराई पर इतना क्यों अड़ा हुआ है। यहां पर उसने कहा कि उसकी "सांस [उसकी] स्त्री को घिनौनी लगती है" (19:17)। इस भयानक शारीरिक और मानसिक पीड़ा में राख के ढेर पर बैठे हुए अय्यूब ने कहा, "मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियों से सट गए हैं, और मैं मृत्यु से बाल-बाल बच गया हूँ। हे मेरे मित्रो! मुझ पर दया करो, दया, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे मारा है" (19:20, 21)। अय्यूब अंदर से टूट चुका था और उसे लगा जैसे वह मरने ही वाला हो (17:1)।

*अय्यूब ने निश्चितता से वह कहा, जो उसका विश्वास था और जो उसे पता था।* इस भयानक पीड़ा और दु:ख के बिल्कुल बीच में, अंधेरे में से सूर्य की एक किरण चमकी। अय्यूब ने अपने मित्रों की ओर नज़र घुमाकर देखा और उसने विश्वास का बड़ा अंगीकार किया। अय्यूब अपने स्वार्थी मित्रों को विश्वास की यह घोषणा सुनाना चाहता था और वह चाहता था कि इसे लिख दिया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियां इसे पढ़ सकें (19:23)। अय्यूब इस बात में कोई संदेह नहीं रहने देना चाहता था कि उसका क्या विश्वास है और किसमें है। उसने घोषणा की, "मुझे

तो निश्चित है कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है'' (19:25)। ध्यान से देखें कि उसने क्या कहा।

''मुझे'' यह एक व्यक्तिगत विश्वास की बात है। जो अय्यूब की पत्नी का विश्वास था उसने उसे इस परेशानी से छुड़ाना नहीं था। जो अय्यूब के मित्रों का विश्वास था उसने उसे स्थिर नहीं रखना था। जो पूर्व देश के लोगों का विश्वास था, उसके यहां पर कोई मायने नहीं थे। मायने इस बात के थे कि अय्यूब का क्या विश्वास है। हमारा क्या विश्वास है?

''निश्चय है'' – बेशक परमेश्वर खामोश रहा था, यहां ऐसा कोई अनुमान नहीं है। बेशक परमेश्वर ने अय्यूब को उसके ''क्यों'' के प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए थे, फिर भी अय्यूब ने निश्चितता के साथ बात की। बेशक अय्यूब के किसी मित्र को नहीं लगता था कि वह निर्दोष है पर अय्यूब को एक बात निश्चित पता था। हमें क्या निश्चय है?

''कि मेरा'' – अय्यूब ने एक सर्वनाम का इस्तेमाल किया, जो यह संकेत देता है कि उसका अपने छुड़ाने वाले के साथ अभी भी निजी सम्बन्ध था। क्या हमारा उसके साथ, जिसने हमें सृजा है और हम से प्रेम करता है वैसा ही निजी सम्बन्ध है?

''छुड़ाने वाला'' – छुड़ाने वाला वह होता था जिसने उससे जो खो गया, चोरी हो गया या चला गया हो खरीदकर वापस ले आता था। अय्यूब की सारी आशा खो चुकी थी (6:11), और नीतिवचन 13:12 कहता है, ''जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है तो मन शिथिल होता है।'' अय्यूब की आशा फिर से जाग उठी थी, क्योंकि उसे विश्वास था कि उसे जिलाने वाला जीवित है। इस आश्वासन ने अय्यूब को दृढ़ता से आगे बढ़ते रहने की आवश्यकता के लिए सामर्थ दी।

''जीवित है'' – परमेश्वर चाहे खामोश था पर अय्यूब को मालूम था कि उसका परमेश्वर मरा हुआ नहीं है! बेशक अय्यूब इस सब में परमेश्वर के किसी प्रमाण को नहीं देख सकता था। परन्तु अय्यूब को मालूम था कि उसका परमेश्वर जीवित है। अय्यूब की सेहत, उसकी सम्पत्ति और उसका परिवार छिन चुके थे; परन्तु उसका विश्वास या भविष्य के लिए उसकी आशा नहीं छिने थे। यह बात चाहे यीशु के इस पृथ्वी पर आने, क्रूस पर मरने और फिर से दोबारा जीने के लिए जीवित होने से सदियों पहले लिखी गई थी, पर यह पौलुस द्वारा 2 तीमुथियुस 1:12 में अपनी मृत्यु के लिए कही गई बात को याद दिलाती है: ''इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूं, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिस पर मैंने विश्वास किया है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।'' क्या हमारा वह विश्वास है? क्या हमारा यह विश्वास है कि क्योंकि वह जीवित है इसलिए हम कल का सामना कर सकते हैं?

अय्यूब की समस्याएं अभी भी वास्तविक थीं और इस पुस्तक के अभी तेईस अध्याय और हैं। परन्तु अय्यूब को अपना विश्वास मिल गया था और उसने इसे जताया भी। अय्यूब को परमेश्वर के होने का निश्चय था और उसने उसे बड़े छुड़ाने वाले के रूप में माना। अय्यूब को यह भी निश्चय था कि अंत में ''वह पृथ्वी पर खड़ा होगा'' (19:25)। चाहे अय्यूब को यह यकीन था कि वह मरने वाला है, उसकी खाल नष्ट हो जाएगी (19:26) और उसका शरीर मिट्टी में वापस चला जाएगा, जहां से यह आया था, पर अय्यूब को यह भी यकीन था और उसने निश्चय के साथ कहा, ''मैं परमेश्वर का दर्शन पाऊंगा'' (19:26)। वह कितना बड़ा दिन और कितना शानदार नज़ारा होगा! महिमा में उसकी एक ही झलक से वे सब कष्ट जो हमने सहे हैं जाते रहेंगे।

एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 281. [2]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 190. [3]*नेपेश* शब्द के कई अर्थ हैं। देखें लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 2:1711-13. [4]हार्टले, 282-83. [5]वहीं, 283. [6]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:804. [7]हार्टले, 284. [8]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc, 1994), 171. [9]*थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* सम्पा. आर. लेयर्ड हैरिस, ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, और ब्रूस के. वाल्टके (शिकागो: मूडी प्रैस, 1980), 1:297 में आर. लेयर्ड हैरिस "*हामास, ḥāmās*।" [10]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 237.

[11]वहीं। [12]हेली, 172. [13]वहीं, 174. [14]लचीले शब्द "भाइयों" (*'ach, आच*) का अर्थ एक ही माता और पिता से जन्मे सौतेले भाई, एक ही गोत्र के सदस्य या एक ही समाज के सदस्य के लिए हो सकता है। (कोहलर और वाल्टर बामगार्टनर, 1:29.) [15]हार्टले, 289. [16]हेली, 175. [17]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:334-35. [18]कॉक्स, 241. [19]एंडरसन, 193. [20]इस भाग की अधिकतर सामग्री रॉबर्ट डोनल्ड शैकलफोर्ड, द *कांसेप्ट ऑफ़ नॉलेज इन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (टीएच.डी. डिसर्टेशन, न्यू ऑरलियन्स बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी, 1976), 57-64 से ली गई।

[21]"ऐसी प्रथा की दारा प्रथम के बेहेस्तन के शिलालेख में. पुष्टि हुई है" (हार्टले, 291, एन. 7)। [22]द *ब्रॉडमैन बाइबल कॉमैंट्री,* सम्पा. क्लिफ्टन जे. ऐलन (नैशविल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1971), 4:83 में जॉन डी. डब्ल्यू. व्हटस, "जॉब।" [23]हार्टले, 292. [24]मेरविन एच. पोप, *अय्यूब,* द एंकर बाइबल, अंक 15 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे ऐंड कंपनी, Inc., 1965), 134. [25]रॉबर्ट गोर्डिस, द *बुक ऑफ़ गॉड ऐंड मैन: ए स्टडी ऑफ़ अय्यूब* (शिकागो: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1965), 88. [26]वहीं। [27]सेमुएल रोलेस ड्राइवर ऐंड जॉर्ज बुचनन ग्रे, *ए क्रिटिकल ऐंड एक्सजेटिकल कॉमैंट्री ऑन द बुक्स ऑफ़ अय्यूब* (एडिनबर्ग: टी. ऐंड टी. क्लार्क, 1921), 173. [28]हार्टले, 294. [29]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 173. [30]ए. बी. डेविडसन, द *थियोलॉजी ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट,* सम्पा. एस. डी. एफ. सालमंड (न्यू यॉर्क: चार्ल्स सक्रिब्नर'स संस, 1924), 488-95.

[31]वहीं, 495. [32]बिली कैनथ स्मिथ, द *प्रॉब्लम ऑफ़ द फ्यूचर लाइफ इन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (टीएच. डी. डिसर्टेशन, न्यू ऑरलियन्स बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी, 1963)। [33]कॉक्स, 249. [34]देखें हेली, 178. [35]जॉन बार्टलेट, *फ़ैमिलियर कोटेशंस,* 15वां संस्करण, संशो. व विस्तार, सम्पा. एमिली मॉरिसन बेक (बोस्टन: लिट्टल, ब्राउन ऐंड कं., 1980), 348.